International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

मिडिल स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं भावनात्मक विकास पर शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन

लिजा मैरी[1], डॉ. राजकुमार गौयल[2]

[1]शोधार्थनी, [2]शोध निर्देशक, प्राध्यापक शिक्षा विभाग
श्री वेंक्टेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला,

सार:
शिक्षा जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है जिससे प्राणी अपने व्यवहार में उत्तरोत्तर परिवर्तन करता है। शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक को जगदगुरु की उपाधि से विभू ित किया गया है। शिक्षक, शिक्षार्थी व पाठ्यक्रम में तीनों शिक्षण के स्तम्भ है, जिन पर शिक्षा व्यवस्था रूपी भवन अवस्थित है। प्रस्तुत शोध अध्ययन पत्र मिडिल स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शिक्षको की संवेगात्मक बुद्धि तथा शिक्षक प्रभावोत्दकता के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। यदि कोई शिक्षक अपने समय और संसाधनों का प्रभावी ढंग से उपयोग कर रहा है तो वे कक्षा में बेहतर प्रदर्शन करने की अधिक संभावना रखते है। एक शिक्षक की प्रभावशीलता का सीधा प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।

Keywords: मिडिल स्तर, शैक्षिक उपलब्धि, बुद्धि, शिक्षक प्रभावदकता ।

प्रस्तावना:

पृथ्वी पर जीवन का विकास बहुत ही विलक्षण एवं अद्भुत घटना है। अभी तक किसी अनुसन्धान या वैज्ञानिक परीक्षण से यह ज्ञात नहीं किया जा सका है कि प्रकृति में ये घटनाएँ इसी प्रकार क्यों घटित हो रही हैं। अनंत वर्षो से इस संसार में लाखों जीव अपना जीवन–यापन कर रहे हैं और मानव इन सभी प्राणियों में सबसे अलग है। मनुष्य सृष्टि का एकमात्र ऐसा प्राणी है जो अपने विकास के लिए सतत् प्रयासरत् रहता है। मनुष्य अपनी चिन्तनशक्ति, तर्कशक्ति, कल्पनाशक्ति और रूचि के आधार पर ज्ञान–विज्ञान की विभिन्न शाखाएँ सृजित करता जा रहा है, किन्तु वह ऐसा क्यों कर रहा है? इस सवाल का जवाब शायद आज भी मनुष्य के पास नहीं है। मनुष्य को केवल इतना ज्ञान है कि वह प्रकृति के नियमों में किसी प्रकार का व्यवधान न उत्पन्न करते हुए अपने जीवन की सत्ता को सुरक्षित रखे और आज तक मनुष्य इसे ही अपने जीवन की आवश्यकता, अनुभूति एवं सन्तुष्टि मान कर चल रहा है। इसी के आधार पर अनेक विचारधाराओं, दार्शनिक अवधारणाओं और मान्यताओं का जन्म हुआ तथा दर्शन की इन अवधारणाओं का शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

मनुष्य के अन्दर जन्म से ही कुछ शक्तियाँ विद्यमान होती हैं और अवसर मिलने पर इन शक्तियों का विकास होता है। यदि मनुष्य को अनुकूल अवसर और पर्याप्त सुविधाएँ नहीं मिलती हैं तो उनकी आन्तरिक शक्तियों का पूर्ण विकास नहीं हो पाता। इसलिए मनुष्यों का पूर्ण विकास तभी सम्भव है जब उसे विकास करने के लिए सभी सुविधाएं उपलब्ध हो और उन्हें स्वतंत्रता पूर्वक सीखने का अवसर भी मिले। बच्चों के जीवन के प्रारम्भिक वर्षो में उनके स्वास्थ्य एवं पूर्ण विकास के लिए बच्चों के माता–पिता ही उत्तरदायी होते हैं और अभिभावकों के आचरण तथा व्यक्तित्व का प्रभाव बच्चों के

मानसिक एवं शारीरिक विकास पर अवश्य पड़ता है। इसलिए बच्चों को आदर्श नागरिक बनाने में स्कूल की अपेक्षा परिवार के लोगों का व्यवहार अधिक महत्वपूर्ण है। किन्तु वर्तमान समय में ऐसा प्रतीत होने लगा है कि साथ–साथ रहने के बावजूद समय के अभाव तथा जीवन में व्यस्तता अधिक होने के कारण माता–पिता अपने बच्चे का पूरा ध्यान नहीं रख पा रहे हैं।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :-

विद्यार्थी और शिक्षा का एक दूसरे से बड़ा ही गहरा संबंध है। 'शिक्षा मनुष्य के लिए खान पान से अधिक आवश्यक है। अज्ञानता 'मनुष्य के लिए अभिशाप है, शिक्षा के द्वारा से ही हम 'सत्य और असत्य को जान पाते है। विद्यार्थी तो राष्ट्र की सबसे बड़ी ताकत और सम्पत्ति होते है। मनुष्य का वह समय जो –है शिक्षा प्राप्त करने में व्यतीत होता है, विद्यार्थी जीवन कहलाता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन मिडिल स्तर के विद्याधियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं भावनात्मक विकास पर शिक्षको की संवेगात्मक बुद्धि तथा शिक्षक प्रभावोत्पादकता के प्रभाव पर आधारित है। यह विषय वर्तमान में एक अत्यंत ज्वलत समस्या के रूप में सामने आ रहा है। एक मिडिल स्तर पर पड़ने वाले बालक की शैक्षिक उपलब्धि और उसके भावानात्मक विकास पर उसके शिखर का प्रभाव पड़ता है। बालक जैसे–जैसे बड़ा होता है, वह वातावरण से सामना होने पर समायोजन की समस्या उसके सामने आती है, अतः समायोजन करने हेतु उसको भावानात्मक विकास की आवश्यकता होती है।

शोध समस्या कथन :- मिडिल स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं भावनात्मक विकास पर शिक्षको की संवेगात्मक बुद्धि तथा शिक्षक प्रभावोत्तकत के प्रभाव का अध्ययन

शोध अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण :-

शैक्षिक उपलब्धि :-

शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति से है। छात्र शैक्षिक उद्देयों को प्राप्त करने में किस सीमा तक सफल हुए हैं, यही उनकी शैक्षिक उपलब्धि को दर्शाता है। विद्यार्थियों ने किस सीमा तक अपनी बौद्धिक योग्यता का विकास किया है, यही उनकी उपलब्धि का सूचक है। शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान, कौशल आदि योग्यता की मात्रा से है।

सुपर (1967) :- के शब्दों में ''एक उपलब्धि या क्षमता परीक्षण यह ज्ञात करने के लिए प्रयोग किया जाता है कि व्यक्ति ने क्या और कितना सीखा तथा वह कोई कार्य कितनी भली–भाँति कर लेता है।''

फ्रीमैन (1965) :- के विचार में ''उपलब्धि परीक्षण वह अभिकल्प है जो एक विशेष विषय या पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में व्यक्ति के ज्ञान, समझ और कौशल का मापन करता है।''

चार्ल्स ई. स्किनर के अनुसार :-

शैक्षिक कार्य का अन्तिम परिणाम ही शैक्षिक उपलब्धि है, जो विद्यार्थियों को कार्य के 'बारे में अन्तिम जानकारी प्रदान करता है। शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थी द्वारा दिए गए अधिगम एवं प्रयोग में लाये गये ज्ञान को मापने का सर्वोत्तम साधान है। शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर ही हम विद्यार्थियों के मध्य अन्तर कर सकते है कि यह बालक प्रतिभाशाली है या सामान्य है या पिछड़ा–बालक है। शैक्षिक उपलब्धि से आशय शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त परिणामों से होता है।

भावनात्मक विकास :-
शोध कार्य में भावनात्मक विकास से तात्पर्य मिडिल स्तर के विद्यार्थियों के भावनात्मक विकास है अर्थात् भावनात्मक विकास का सम्बन्ध भावनाओं के उभरने तथा उन्हें व्यक्त करने के समाज स्वीकृत तौर तरीकों को सीखने से है। जीवन में बौद्धिक विकास से ज्यादा जरूरी है भावनात्मक विकास। स्कूल का माहौल स्कूली जीवन की गुणवत्ता और चरित्र को दर्शाता है। एक सकारात्मक स्कूल माहौल लोगों को स्कूलों में सामाजिक, भावनात्मक और शारीरिक रूप से सुरक्षित महसूस करने में मदद करता है। अपनी और दूसरो की भावनाओ को पहचानने की क्षमता, अलग भावनाओं के बीच भेदभाव और उन्हें उचित रूप से लेबल करना, सोच और व्यवहार मार्गदर्शन करने के लिए भावनात्मक विकास आवश्यक है बालक अपनी भावनात्मक समझ का उपयोग कर सामने वाले व्यक्ति से ज्यादा अच्छी तरह से संवाद कर सकता है और ज्यादा बेहतर परिणाम पा सकता है।

संवेगात्मक बुद्धि :-
संवेगात्मक बुद्धि दो प्रत्ययो से मिलकर बना है संवेग और बुद्धि। संवेग का अर्थ है उद्देलन की अवस्था एवं बुद्धि का अर्थ है विवेक पूर्ण चिन्तव की योग्यता। इस प्रकार संवेगात्मक बुद्धि एक आन्तरिक योग्यता है जिसके द्वारा व्यक्ति में संवेगों को महसूस करने, समझने एवं उनका प्रभावपूर्ण नियन्त्रण करने की क्षमता का विकास होता है।
संवेगात्मक बुद्धि वह क्षमता होती है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने संवेगों को पहचानता है, संवेगों का उचित प्रकटीकरण करता है तथा दूसरों के संवेगों को समझकर उसके सामने वैसा ही व्यवहार करता है।

सोलते मैयर के अनुसार :- संवेगात्मक बुद्धि, संवेगों का प्रत्यक्षीकरण करने, उन्हें समझने, उसका प्रबन्धन करने एवं उन्हें प्रयोग में लाने की योग्यता है।''

शोध अध्ययन के उद्देश्य :-
1. छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर शिक्षकों की संवेगात्मक वुद्धि के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाए :-
1. छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर शिक्षकों की संवेगात्मक वुद्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

शोध अध्ययन विधि :-
प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए "वर्णनात्मक अनुसंधान" का एक प्रकार आदर्शमूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करना उचित लगेगा इसलिए शोधकर्ती द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग प्रस्तुत शोध अध्ययन में किया गया है।

शोध अध्ययन की जनसंख्या :-
प्रस्तुत शोध अध्ययन में मिडिल स्तर शिक्षा परिषद उ0प्र0 द्वारा मान्यता प्राप्त तथा सरकार द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त मिडिल स्तर के विद्यालयों का अध्ययन किया गया। इस प्रस्तुत शोध अध्ययन

जनपद मुरादावाद के सहायता प्राप्त मिडिल स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 8 के विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :-

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकता ने उद्देश्यों के अनुरूप उपकरणों की खोज की, अतः शोधकर्ती ने शोध पर्यवेक्षक एवं शोध क्षेत्र के अन्य अनुभवी विद्वानों से सम्पर्क किया तथा उनके परामर्श से मानकिकृत उपकरण का प्रयोग किया है।

अध्ययन का परिसीमांकन :-

प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल जनपद मुरादावाद तक ही सीमित है। शोध अध्ययन में केवल मिडिल स्तर पर अध्ययनरत् केवल कक्षा 8 के ही विधार्थियों का ही चयन किया गया है

आंकडों का वि लेशण एवं व्याख्या:-

प्रस्तुत शोध अध्ययन कि निम्नलिखित सीमायें निर्धारित हैं।

परिकल्पना परिक्षण-1 छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर शिक्षकों की संवेगात्मक वुद्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

तालिका संख्या -1

छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर शिक्षकों की संवेगात्मक वुद्धि सम्वन्धी ज्ञान

	लेवेन परिक्षण		साधनों की समानता के लिए टी टेस्ट							
								Sig.		
	F	Sig.	F	Sig.	F	Sig.	F	नीचा करना	ऊपरी	
छात्र	4.162	.044	1.009	198	.314	.03994	.03951	-.03816	.11805	अस्वीकृत
छात्राऐं			1.022	196.089	.308	.03994	.03409	-.03715	.11704	

तालिका संख्या - 1 के अवलोकन से स्पश्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यालयों के विद्यार्थियों की भावनात्मक विकास के बीच महत्वपूर्ण अंतर है।

निष्कर्ष –

छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि का शिक्षकों की संवेगात्मक वुद्धि के लिए महत्वपूर्ण कारक है। संवेगात्मक वुद्धि के विभिन्न आयामों को विकसित करने के लिए उनके स्कूलों में नृत्य गायन नाटकिय जैसी विभिन्न प्रकार की सह पाठयचर्या गतिविधियॉ प्रदान की जानी चाहियें। शिक्षको को अच्छा वातावरण वनाना चाहिए और संवेगात्मक वुद्धि में सुधार के लिए विधाथियों को उनके साथियों के साथ बेहतर वातचीत के अवसर प्रदान करने चाहिऐं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:–

1.अरोड़ा, रीता (2005);''शिक्षा में नव चिन्तन'', जयपुरः शिक्षा प्रकाशन।

2.अग्निहोत्री, रविन्द्र (2007);''आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्याऐं एवं समाधान'', जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
3.भट्टाचार्य, जी0सी0 (2005);''अध्यापक शिक्षा'', आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
4.दुबे, श्यामाचरण (2005);''भारतीय समाज'', दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, पृष्ठ–126।
5.लाल एवं पलोड़ (2007);''शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग'', मेरठः आर0लाल बुक डिपा।
6.प्रसाद, देवी (2001);''शिक्षा का वाहनः कला'', दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, पृष्ठ–68,।
7.पाण्डेय, राम शुक्ल (2007);''शैक्षिक नियोजन एवं वित्त प्रबन्धन'', आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर, पृष्ठ–105, 115, 116, 124।
8.शर्मा, रजनी एवं पाण्डेय, एस0पी0 (2005);''शिक्षा एवं भारतीय समाज'', तयपुरः शिक्षा प्रकाशन, पृष्ठ 128–129।
9.सुखिया, एस0पी0 (2005);''विद्यालय प्रशासन एवं संगठन'', मेरठः आर0लाल बुक डिपो।
10. अन्वेषिका, एन0सी0टी0ई0, नई दिल्ली।
11. ''भारत की जनसंख्या'', उपकार प्रकाशन, आगरा–2.
12. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, विद्या भारती, लखनऊ (उ0प्र0)
13. गिजुभाई बोधका –शिक्षक हों तो, पृ0 36
14. राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, वार्षिक रिर्पोट नई दिल्ली– 1996–97
15. शिक्षा चिन्तन, त्रिमूर्ति संस्थान, कानपुर (उ0प्र0)
16. ''उत्तर–प्रदेश एक अध्ययन (शिक्षा के सन्दर्भ में) साहित्य भवन पब्लिकेशन्स'',आगरा–3.